ISSN: 2584-0231(Online)
International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology
© IJMRAST | Vol. 2 | Issue 12 | December 2024
Available online at: https://ijmrast.com
DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v2i12.100

पंडित रविशंकर जी का व्यक्तित्व और कृतित्व

प्रो0 शैफाली यादव[1], कु0 रंगोली यादव[2]

[1]प्राचार्य, कुँ0आर0सी महिला डिग्री कॉलेज, मैंनपुरी, उत्तर प्रदेश।

[2]प्रवक्ता, संगीत विभाग, कुँ0आर0सी महिला डिग्री कॉलेज, मैंनपुरी, उत्तर प्रदेश।

Corresponding Author Email Id: krcmpi@rediffmail.com

सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत में पंडित रविशंकर को 20 वीं सदी के उत्तरार्द्ध के शीर्ष सितार वादकों में से एक माना जाता है। उन्होने आलाप खंड के लिए सितार के बेस ऑक्टेव पर प्रदर्शन को लोकप्रिय बनाया और मध्य और उच्च के रजिस्टरों में एक विशिष्ट वादन शैली के लिये जाने गये। शंकर ने अपने समकालीनों से अलग एक शैली विकसित की और कर्नाटक संगीत की लय प्रथाओं प्रभावों को शामिल किया। शंकर ने भारतीय शास्त्रीय संगीत बजाते हुए यूरोप और अमेरिका का दौरा करना शुरू किया तथा शिक्षण, प्रदर्शन और प्रसिद्व वायलिन वादक येहुदी मेनुहिन और बीटल्स गिटारवादक जॉर्ज हैरिसन के साथ अपने सहयोग के माध्यम से वहाँ इस संगीत की लोकप्रियता में इजाफा किया। पश्चिमी पॉप संगीत में भारतीय वाद्ययंत्रों के उपयोग को लोकप्रिय बनाने में मदद की।

भूमिका

भारत की संगीत संस्कृति के इतिहास में बींसवी शताब्दी में जितनी तेजी से अनेकानेक परिवर्तन आ गये, इससे पूर्व काल में शायद कभी आ पाये हों। जब हम संगीत विषय के अध्ययन, शोधकार्य, ऐतिहासिक परम्पराओं का प्रचलन तथा उसमें कलानुरूप आये परिवर्तन की बात तथा अभ्यास करते है, तो इन सबके कारक सांगीतिक व्यक्तित्वों की चर्चा, उनके योगदानों का विश्लेषण आवश्यक हो जाता है।

बीसवीं शताब्दी के शुरूआती समय में ही नवीन प्रोद्योगिकी (टेक्नोलॉजी) का प्रवेश भारत में और भारतीय संगीत में हो चुका था। विज्ञान और वैज्ञानिक उपकरणों की उपयोगिता अनुभव की जा रही थी। ध्वनि वर्धन और ध्वनि वर्धक यंत्र, ध्वन्यांकन और ध्वन्यांकरण तथा ध्वन्यांकित हुई वस्तुऐं, सामग्री, बेतार ध्वनि प्रक्षेपण प्रोधोगिकी से हमारे संगीत की निर्मिती, प्रस्तुति, संगीत का स्वरूप, आवरण सभी पर प्रभाव पडा तथा जिसे भलीभाँति समझकर अपनाने से ही संगीतकार, कलाकार आगे बडे है। परिवर्तन की इस तीव्र लहर को भाँपते हुए एवं स्वीकार करते हुए तथा इसमें अपना योंगदान देने वाले संगीतकारों में प्रमुख थे पं0 रविशंकर।

इन परिवर्तनों के दूरदृष्टियुक्त दृष्टा क्रान्तिदूत जो अग्रसर हुए उनमें एक विशिष्ट व्यक्तित्व हैं, पं0 रविशंकर जी।

पं0 रविशंकर यह नाम आते ही हमारे मस्तिष्क में आता है भारतीय संगीत या सितार। बल्कि संगीत या सितार ही नहीं अन्य और भी बहुत कुछ। क्या है उनका संगीत ? यही बताते हुए प्रस्तुत लेख में मैनें जो पण्डित जी के बारे में पढ़ा

और समझा उसे अपनी वाणी में व्यक्त करने का प्रयत्न करने जा रही हूँ। समझ में नहीं आता कि मैं पं0 रविशंकर जी जैसे महान व्यक्तित्व के बारे में कहाँ से आरम्भ करूँ। आइये इनके प्रारम्भिक जीवन से शुरूआत करते है।

प्रारम्भिक जीवन

प्रसिद्ध सितार वादक पं0 रविशंकर जी का जन्म 7 अप्रैल 1920 में वाराणसी में हुआ। उनका जन्म बंगाली ब्राह्मण परिवार में हुआ था उनका बचपन भी अपने आप में अद्वितीय था। उनके पिताजी श्यामशंकर जी भी एक महान दार्शनिक तथा संगीतज्ञ थे। उनकी माता भी एक अच्छी संगीतज्ञ थी। जिनका नाम हेमांगिनी देवी था। पं0 रविशंकर जी का अपने माता पिता से बहुत ही अच्छी परवरिश मिली थी। यह अपने चार भाइयों में सबसे छोटे थे। इनके बड़े भाई उदयशंकर जी संगीत तथा नृत्य के प्रतिष्ठित कलाकार थे। (उदयशंकर, राजेन्द्र शंकर, ज्ञानेन्द्र शंकर)

प्रारम्भ में पं0 रविशंकर जी को नृत्य की शिक्षा अपने भाई उदयशंकर जी से मिली। 18 वर्ष की आयु तक वह अपने भ्राता उदयशंकर जी की नृत्य मण्डली में रहे। वहीं से उन्होंने नृत्य छोड़कर सितार सीखना प्रारम्भ किया। यहीं सन् 1935 में वह मैहर के उस्ताद अलाउद्दीन खाँ के सम्पर्क में आये। उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत के प्रति इनकी गहन रूचि देखकर अति प्रभावित हुए। सितार के जादू से बँधे पं0 रविशंकर जी सन् 1938 में मैहर आ गये और अलाउद्दीन खाँ का शिष्यत्व ग्रहण करके संगीत की कठोर साधना में लग गये। छः वर्ष तक इन्होने घनघोर प्रयास के बाद यह सितार में सन् 1944 तक यह पूर्णतः निपुण हो गये। गुरू के प्रति इनकी सच्ची भक्ति और निष्ठा और अपने लक्ष्य के प्रति जागरूकता और संगीत के प्रति आश्चर्यजनक उन्नति देखकर अलाउद्दीन खाँ ने सन् 1941 में ही अपनी सुपुत्री "अन्नपूर्णा" जो कि एक सुरबहार वादक थीं के साथ इनका विवाह कर दिया था। विवाह के बाद इनको एक पुत्र हुआ, जिसका नाम शुभेन्द्र शंकर था। जिसकी मात्र 50 वर्ष की अवस्था में ही वर्ष 1992 में निधन हो गया जो अपने पीछे तीन बच्चों और पत्नी को छोड़ गये। पं0 जी ने सन् 1989 में "सुकन्या राजन" से दूसरी शादी की। पं0 रविशंकर जी की दो पुत्रियाँ "अनुष्का शंकर" जो सितार वादक है, दूसरी "नोराह जोन्स" जो शीर्षस्थ गायकों में शुमार की जाती है।

प्रारम्भिक करियर और आकाशवाणी से जुड़ाव

पं0 रविशंकर जी की संगीत के प्रति प्रतिभा बढ़ती ही जा रही है। श्रोता इनका सितार सुनकर मनमोहित होने लगे थे। इन्होने आकाशवाणी के लिए अनेक वाद्य वृन्द रचनाएँ की तथा राष्ट्रीय वाद्यवृन्द के संचालक के रूप में कार्य किया। पं0 जी ने सन् 1949 से 1956 ई0 तक ऑल इण्डिया रेडियो आकाशवाणी दिल्ली में बतौर संगीत निर्देशक व कण्डक्टर के रूप में कार्य किया। यहीं से आर्केस्ट्रा की नींव पड़ी। उन्होंने आकाशवाणी के लिए तैयार की कई संगीत रचनाएँ अमर भारत की यादगार धुनों, सारे जहाँ से अच्छा, स्वागतम एवं दूरदर्शन के लिए तैयार की गई कई धुनें जिन्होंने हमारे दौर के साउंड ट्रैक पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

पं0 जी केवल भारतीय शास्त्रीय संगीत को ही वैश्विक मानचित्र पर नहीं लाए बल्कि वे भारत को भी वहाँ ले गये। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। उन्होंने अनेक भारतीय कलाकारों को विदेशी मंच दिलाने के लिए मार्ग तैयार किये थे। और उन्हें वहाँ तक ले गये। मोंटेरो तथा बुडस्टॉक में संगीत की प्रस्तुतियों द्वारा पं0 जी एक सुपर स्टार बन चुके थे। पश्चिम की महान संगीत विभूतियों जैसे– यहूदी मेन्युहिन, जीन पियरे, रामपाल, फिलिप ग्लास, यमामोटो एवं मुसुमी मियासिथा के साथ मिलकर अनेंको प्रस्तुतियाँ दीं। उन्होंने साथ ही प्रस्तुतियों में पश्चिमी वाघों का भी खूब प्रयोग किया और अपने परम्परागत रागों को भी अक्षुण्ण बनाए रखा। सन् 1971 में बांग्लादेश मुक्ति संग्राम के समय वह वहाँ से भारत आ गये। पं0 जी ने बांग्लादेश की आर्थिक सहायता के लिए एक संगीत समारोह आयोजित किया। पं0 जी इतने उदार हृदय के थे कि दूसरे लोगों तथा उनकी समस्याओं के बारे में भी सोचते थे। पं0 जी ने विभिन्न विश्व विद्यालयों में

आख्यान तथा अपनी सांगीतिक प्रस्तुतियाँ दी थीं। विदेशों में भी कार्यक्रम प्रस्तुत किये। जिससे उनके महान देश का संगीत विशिष्ट संगीत की श्रेणी में स्थापित हो गया। इसी भारतीय संगीत को बाद में विश्व संगीत (World music) के रूप में जाना गया।

"जॉर्ज हैरिसन ने सही ही कहा कि वह "गॉड फादर ऑफ वर्ल्ड म्यूजिक" थे।" सन् 1962 में बम्बई में " किन्नर स्कूल ऑफ म्यूजिक" की स्थापना की। आकाशवाणी के संग्रहालय में पं0 रविशंकर की कुछ रचनाएँ– हेमंत, गावती, बसंत, रंगोली, कारी बदरिया, गाँव की गोरी, चपला, अवेकनिंग, रसरंग, री अवेकनिंग, द चाइल्ड, सिंधु भैरवी, तिलंग, आदि वसंत, पहाडी, झिंझोटी आदि है।

पं0 रविशंकर जी ने वाद्य वृन्द एक उदाहरण और प्रयोग के रूप में किया। उनकी " कम्पोजिशन्स" "वेस्टर्न आर्केस्टा" से अलग हुआ करती थी। उनकी रचनाओं में मेलाडी का विशेष ध्यान था। उनकी अधिकांश रचनाएँ भारतीय शास्त्रीय संगीत पर ही आधारित हुआ करती थीं। जिसमें वह राग के चलन उसके वादी–सम्वादी तथा भावों पर पूरा ख्याल रखा जाता था। उनकी कुछ रचनाएँ ठुमरी पर तथा कुछ लोक संगीत पर आधारित थीं। पं0 जी ने अपने वाद्य वृन्द में अधिकतम प्रयोग भारतीय वाद्यों का ही किया। जिसमें रूद्र वीणा, विचित्र वीणा, सरस्वती वीणा, मृदन्गम, जलतरंग, सारंगी, बाँसुरी, सितार, तबला, पखावज, ढोलक आदि कुछ पाश्चात्य वाद्य वायलिन एवं चैलो इन्होंने लिया। पं0 जी ने वाद्य वृन्द को शुरूआती नाम " एन्सेम्बेल्ड म्यूजिक" दिया।

गुरू के रूप में पं0 जी

पंडित जी न केवल खुद ही एक अच्छे शिष्य थे बल्कि एक अच्छे गुरू भी थे। पंडित जी अपने शिष्यों को सिखाने के लिए तत्पर रहते थे। जिसमें उनके बहुत से शिष्य दस–दस वर्ष की आयु से ही उनके घर में ही रहकर सीखा करते थे। वह अपने शिष्यों से कभी भी फीस या कोई भी उपहार नहीं लिया करते थे।

पंडित जी न केवल परम्परागत संगीत के गुरू ही थे बल्कि वह संगीत के एक नये स्वरूप के अन्वेषक थे। यही गुरू शिष्य की परम्परा इनकी विदेशों में फैली। वह कई भारतीय कलाकारों को विदेशी मंच पर ले गये। और उनको आगे बढाया। " जॉर्ज हैरिसन " विख्यात बीटल संगीतकार, के संगीत के संसार में उस दिन भूचाल आ गया जिस दिन उन्होंने पं0 जी को सजीव प्रस्तुति देते सुना। उसी दिन के बाद " जॉर्ज हैरिसन " इनके शिष्य बन गये। उनके और " जॉर्ज हैरिसन " के बीच पिता और पुत्र जैसा सम्बन्ध था। पं0 जी प्रमुख शिष्यों के नाम– उमाशंकर मिश्र, गोपाल कृष्ण, जयबोस, शंभूदास, शंकरघोष, कार्तिक कुमार आदि उल्लेखनीय है।

पं0 जी द्वारा सृजित राग

पं0 जी द्वारा बनाये गये कई राग प्रचलित हैं जिनमें नट भैरव और बैरागी भैरव इतने लोकप्रिय हो गये कि कई संगीतकार इनके यह राग, प्राचीन राग श्रेणी में रखते थे। शायद ही कोई दिन ऐसा जाता हो जब रेडियो पर कोई न कोई कलाकार इनके बनाये इन दो रागों को गाता–बजाता न हो। पं0 जी द्वारा बनाये गए राग अतुलनीय है।

पं0 रविशंकर जी द्वारा बनाये गये राग- अहीर ललित, कौशिक तोड़ी, गुंजी कान्हड़ा, चारू कौंस, तिलक श्याम, कामेश्वरी, मोहनकौंस, गंगेश्वरी, पूर्वी कल्याण, पंचम से गारा, रसिया, मंनमंजरी, पीलू बंजारा, नन्द ध्वनि आदि अनेक रागों की सूची है।

पं0 जी कर्नाटक संगीत शैली के भी बहुत बड़े प्रशंसक थे। जिससे प्रेरित होकर पं0 जी ने कर्नाटर संगीत शैली के किरवानी, सिम्हेंद्र मध्यम, वाचस्पति, चारूकेशी, मलयमारूतम, आरभी आदि रागों को अपनी शैली के हिसाब से परिचित किया।

पं0 रविशंकर जी द्वारा लिखी पुस्तकें

संगीतकार पं0 रविशंकर ने "माई म्युजिक माई लाईफ" पुस्तक लिखी है जो उनकी आत्मकथा है। यह पुस्तक उनके एक संगीतकार और सितारवादक के रूप में करियर पर प्रकाश डालती है। यह 1968 में प्रकाशित की गयी थी।

1979 में भारतीय संगीत सीखनाः एक व्यवस्थित दृष्टिकोण लिखी।

1997 में राग मालाः रविशंकर की आत्मकथा लिखी।

पं0 जी का फिल्मी संगीत में योगदान

पं0 जी का सिनेमा क्षेत्र में भी योगदान कम नहीं रहा। रविशंकर जी ने भारत, कनाड़ा, यूरोप तथा अमेरिका में बैले तथा फिल्मों के लिए भी संगीत कम्पोज किया। महान संगीत निर्देशक 'सत्यजीत रे' की बंगाली फिल्म 'अपू त्रिलोगी' जो कि बहुचर्चित फिल्म थी उसमें संगीत दिया। हिन्दी फिल्म 'अनुराधा' में भी इन्होंने संगीत दिया। इनमें 'गुलजार' द्वारा निर्मित फिल्म 'मीरा' भी शामिल है। 'रिचर्ड एटिनबरा' की 'गाँधी' में इन्हीं का संगीत है। इन्होंने कई पाश्चात्य फिल्मों में भी संगीत दिया। पं0 रविशंकर जी की एल्बमों की भी एक लम्बी सूची है, जिसमें–

तीनराग:- 1956 में रिलीज हुई 'तीनराग' उनका पहला एल0 पी0 एल्बम था। इसे वर्ष 2000 में एंजेल रिकॉर्ड्स द्वारा डिजिटल प्रारूप में जारी किया गया था।

तानामन:- इस एल्बम को मूल रूप से 'द रविशंकर प्रोजेक्ट' का श्रेय दिया गया था। यह एल्बम सन् 1987 में रिलीज किया गया था।

फैयरवैल माय फ्रैंड:- जब पं0 जी ने सत्यजीत रे की मृत्यू के बारे में सुना, तो उन्होंने यह एल्बम की रचना की।

द साउंड्स ऑफ इण्डिया:- यह एल्बम 1968 में एलपी एल्बम के रूप में जारी किया गया था। 'द साउंड्स ऑफ इण्डिया' को 1989 में सीडी प्रारूप में डिजिटल रूप से फिर से जारी किया गया था।

पं0 रविशंकर जी को सन् 1957 में सिल्वर बीयर एक्ट्रा ऑर्डीनरी प्राइस ऑफ दी जूरीः बर्लिन इण्टरनेशनल फिल्म फेस्टिवल ('काबुलीवाला' फिल्म के संगीत निर्देशन हेतु) मिला।

पं0 जी को सन् 1997 में प्रीमियम इम्पीरियल फॉर म्यूजिक, (दी जापान आर्ट एसोसिएशन) के लिए मिला।

सन् 2010 में ऑनरेरी डॉक्टर ऑफ लॉज, द यूनिवर्सिटी ऑफ मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया मिला।

पं0 रविशंकर जी को मिले चुनिन्दा अवॉर्ड्स

पं0 रविशंकर जी को अनेक राष्ट्रीय तथा अर्न्तराष्ट्रीय पुरूस्कार प्राप्त हुए। इस प्रसिद्ध सितार वादक को चौदह डॉक्टरेट और डिसिकोट्टम सहित दुनिया भर के कई पुरूस्कार से सम्मानित किया गया।

ग्रैमी अवार्ड:- पं0 रविशंकर जी ने अपने जीवनकाल में पाँच ग्रैमी पुरूस्कार जीते। जिसमें 1968 में ग्रैमी को को प्राप्त करने वाले वह पहले भारतीय बनें।

सन् 1968 में बेस्ट चैम्बर म्यूजिक परफॉर्मेन्स– वेस्ट मीट्स ईस्ट (यहूदी मेन्यूहिन के साथ) मिला।

सन् 1973 में एल्बम ऑफ दी ईयर– द कन्सर्ट फॉर बांग्लादेश (जॉर्ज हैरिसन के साथ) मिला।

सन् 2000 में वेस्ट वर्ल्ड म्यूजिक एल्बम– फुल सर्कलः कार्निगल हॉल के लिये मिला।

सन् 2013 में वेस्ट वर्ल्ड म्यूजिक एल्बम– द लिविंग रूप सेशन्सः पहला भाग के लिये मिला।

लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड:- पं0 जी को सन् 2012 में 55 वें वार्षिक ग्रैमी अवार्ड्स के अवसर पर इस प्रतिष्ठित पुरूस्कार से सम्मानित किया गया।

पद्म भूषण:- सन् 1967 में रविशंकर जी को भारत के तीसरे सर्वोच्य नागरिक पुरूस्कार से सम्मानित किया गया था।

पदम विभूषण:- भारत का दूसरा सर्वोच्य नागरिक सम्मान पद्म विभूषण सन् 1981 में दिया गया।

भारत रत्न:- सन् 1999 में, इस महान सितार वादक को सर्वोच्य नागरिक पुरूस्कार से सम्मानित किया गया।

पं0 रविशंकर जी का राजनीतिक करियर

सन् 1986 में, भारतीय संगीत में उनके महान योगदान के लिए उन्हें तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री राजीव गाँधी द्वारा राज्यसभा के लिए नामित किया गया था। उन्होंने 12 मई 1986 से 11 मई 1992 तक भारतीय संसद के उच्च सदन के सदस्य के रूप में कार्य किया।

राज्यसभा मानद सदस्य

सन् 1986 में राज्यसभा के मानद सदस्य चुनकर भी उन्हें सम्मानित किया गया। सन् 1986 से 1992 तक राज्यसभा के सदस्य रहे। सितार वादक पंडित रविशंकर भारत के उन गिने चुने संगीतज्ञों में से थे, जो पश्चिम बंगाल में भी लोकप्रिय रहे। रविशंकर अनेक दशकों से अपनी प्रतिभा दर्शाते रहे। सन् 1982 के दिल्ली एशियाड (एशियाई खेल समारोह) के 'स्वागत गीत' को उन्होंने कई स्वर प्रदान किये थे। उनको देश–विदेश में कई बार सम्मानित किया जा चुका है।

पं0 रविशंकर जी का निधन

पं0 रविशंकर जी का निधन 11 दिसम्बर, 2012 को सैन डिएगो, कैलिफोर्निया में 92 वर्ष की आयू में हुआ। पं0 जी ऊपरी श्वास और हृदय रोग से पीड़ित थे। उनका आखिरी प्रदर्शन कैलिफोर्निया के टैरिस थिएटर में उनकी बेटी के साथ हुआ था। पं0 रविशंकर जी की विरासत को अब उनकी बेटी अनुष्का शंकर सितार वादक तथा प्रतिभाशाली संगीतकार हैं, उन्होंने ही आगे बढाया है।

निष्कर्ष

भारत के संगीत एवं सांस्कृतिक इतिहास में पं0 रविशंकर जी जैसे व्यक्तित्व और कृतित्व के धनी महामानव बिरले ही मिलते हैं। उनके जैसे सितार वादक एवं संगीतकार सदियों में कहीं पैदा होते हैं। उन्होंने भारतीय शास्त्रीय संगीत को भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी ऊँचाईयाँ प्रदान कीं। उन्होंने शास्त्रीय संगीत एवं मैहर सितार बाद्य को दुनियाँ में लोकप्रियता दिलाई। यह काफी डेलिकेट भी थे और गुरूत्वपूर्ण भी थे। उन्होंने जो आकाशवाणी में अपना योगदान दिया वह आकाशवाणी में आज भी जारी रखा है। उनके द्वारा बनाये गये एल्बम्स राग आज भी प्रचलित हैं। वह अपनी भारतीय परम्परा एवं ऐतिहासिक धरोहर पर सशक्त खड़े रहे। यह उनकी महानता का ही प्रमाण है कि उन्होंने नौ दशकों से अधिक समय मंच पर ही व्यतीत किया तथा उनके अन्तिम समय उनकी प्रसिद्धि चरम सीमा पर रही। ऐसे युग पुरूष, भविष्य दृष्टा महामानव पं0 रविशंकर जी को मेरा शत्–शत् नमन।

संदर्भ ग्रंथ–सूची

[1]. ऋतास्वामी चौधरी, संगना, 2019–2020, 2454–8456

[2]. वसंत, संगीत विशारद, 2022, 81–85057–00–1

[3]. एल0एन0गर्ग, हमारे संगीत रत्न, 1984–94

[4]. **https://saptswargyan.in**

[5]. **https://samanyagyanedu.in**

[6]. **https://hindi.webdunia.com**

[7]. **https://www.gaonconnection.com**

Cite this Article

प्रो0 शैफाली यादव, कु0 रंगोली यादव, "पंडित रविशंकर जी का व्यक्तित्व और कृतित्व", *International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST), ISSN: 2584-0231, Volume 2, Issue 12, pp. 21-26, December 2024.*

Journal URL: *https://ijmrast.com/*

DOI: *https://doi.org/10.61778/ijmrast.v2i12.100*

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.